RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

कक्षा-12 इतिहास

हिंदी माध्यम

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ARJUN BATCH

भक्ति सूफी परम्पराएं

Chapter-6 | Part-5



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?



1. ख़ानक़ाह और सिलसिला
2. सिलसिलों के नाम
3. ख़ानक़ाह के बाहर
4. उपमहाद्वीप में चिश्ती सिलसिला
5. चिश्ती ख़ानक़ाह में जीवन
6. नवीन भक्ति पंथ

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

'सूफी परंपरा'

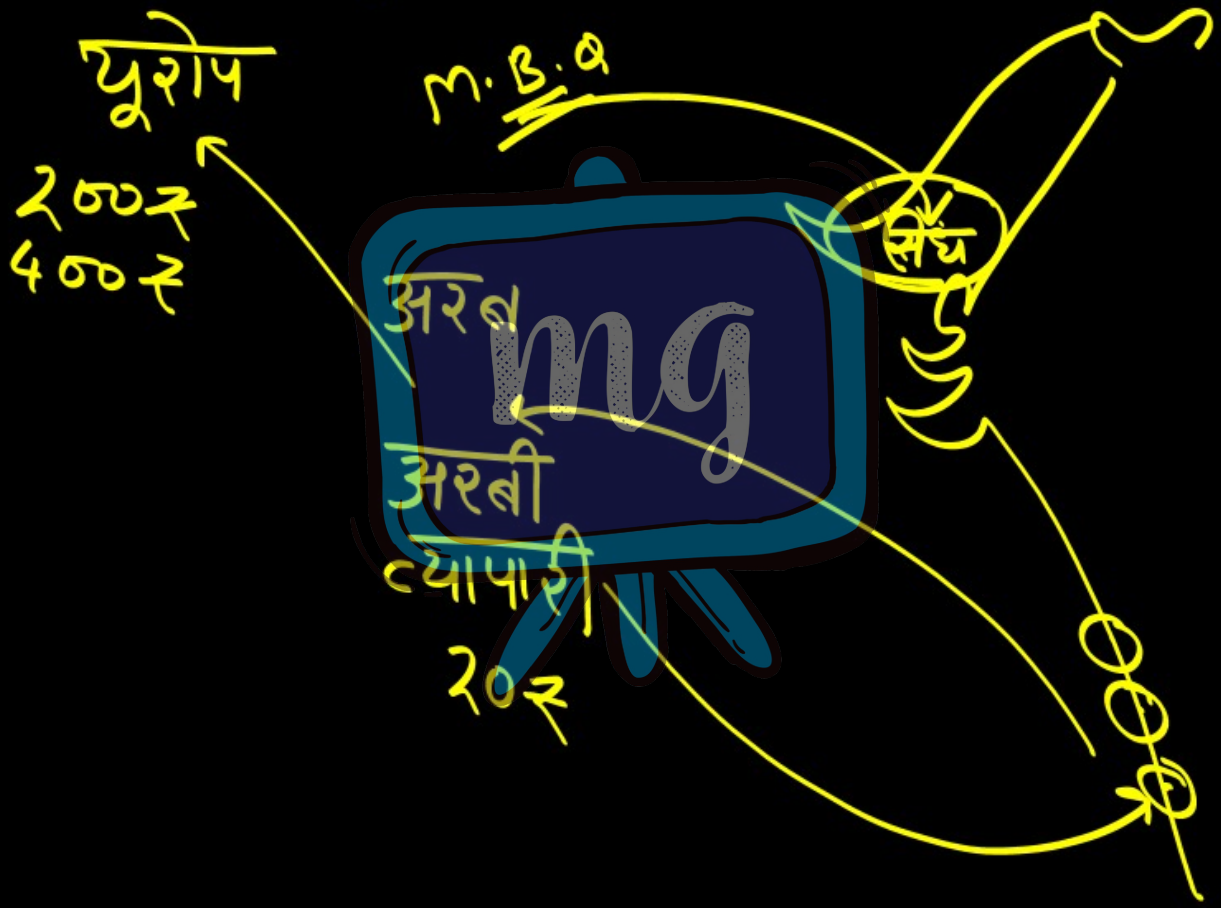

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

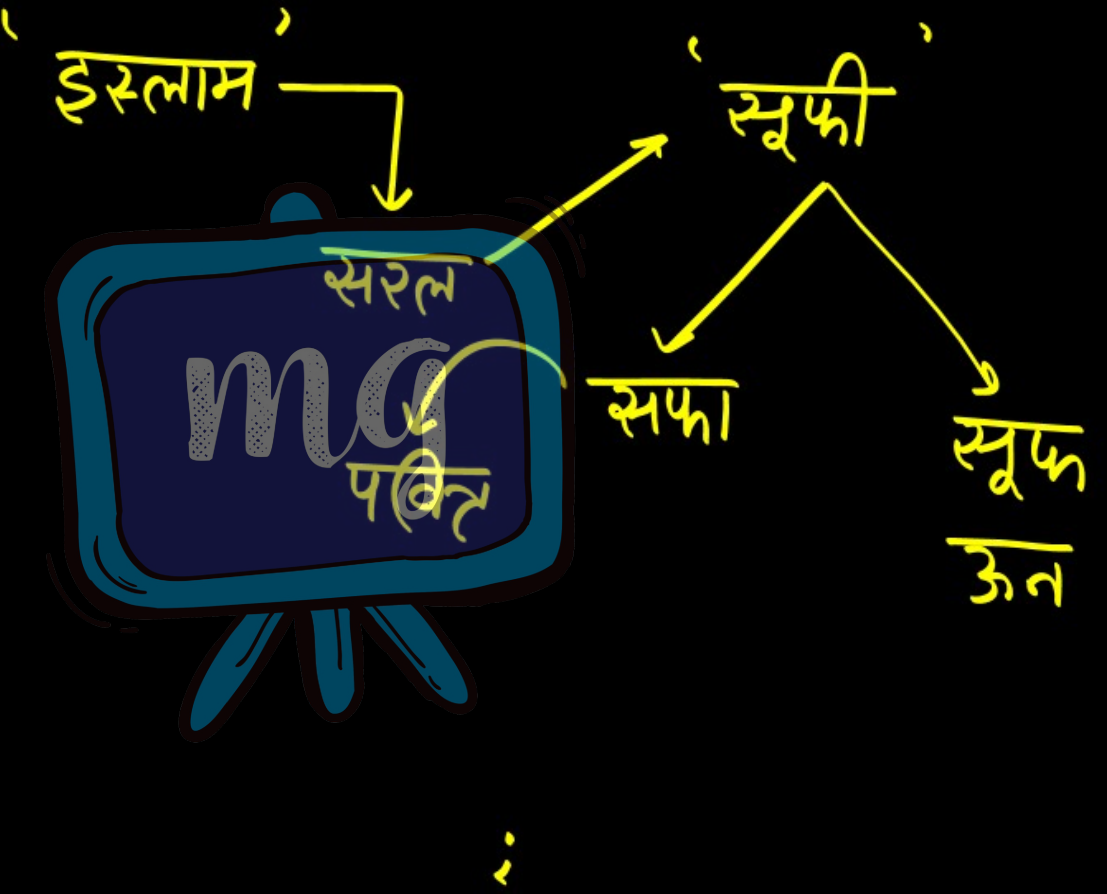

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

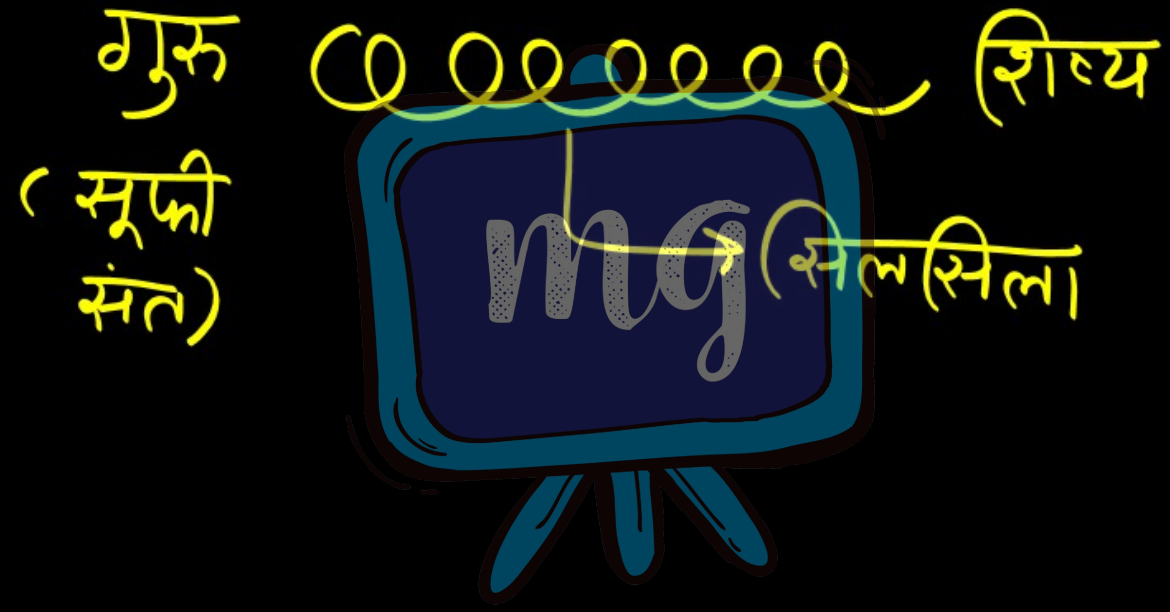

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



खानकाह और सिलसिला :

- ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते सूफीवाद एक पूर्ण विकसित आन्दोलन था।
- सूफी अपने को एक संगठित समुदाय-खानकाह के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे।
- खानकाह का नियंत्रण शेख/ पीर अथवा मुर्शीद के हाथ में था।
- वे अनुयायियों की भर्ती करते थे और अपने वारिस (खलीफा) की नियुक्ति करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सूफी शब्दावली

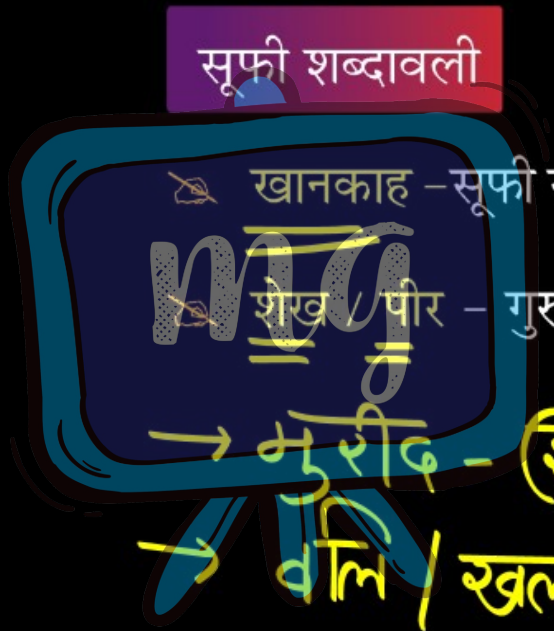

- खानकाह – सूफी संत का आध्यात्मिक क्षेत्र (आश्रम)
- शेख / पीर – गुरु / मुर्शिद → शिक्षक
- → मुरीद – शिष्य
- → वलि / खलीफा – उत्तराधिकारी

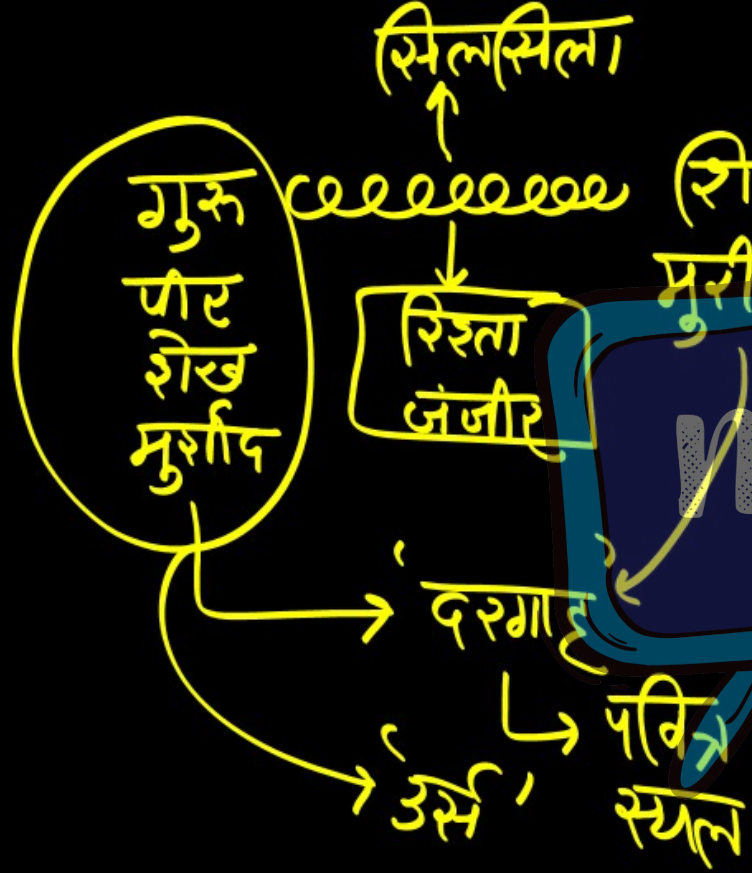

- 12 वीं शताब्दी के आस-पास सूफी सिलसिलों का गठन होने लगा था।
- सिलसिले का अर्थ :- सिलसिले का शाब्दिक अर्थ है, जंजीर जो शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते की घोतक है जिसकी पहली अटूट कड़ी पैगम्बर मोहम्मद से जुड़ी है।
- पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह उसके मुरीदों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इस तरह पीर की दरगाह पर जियारत के लिए जाने की खासतौर से उनकी बरसती के अवसर पर, परिपाटी चल निकली।
- इस परिपाटी को उर्स (पीर की आत्मा का ईश्वर से मिलन) कहा जाता था।
- इस तरह शेख का वली के रुप में आदर करने की परिपाटी शुरु हुई।

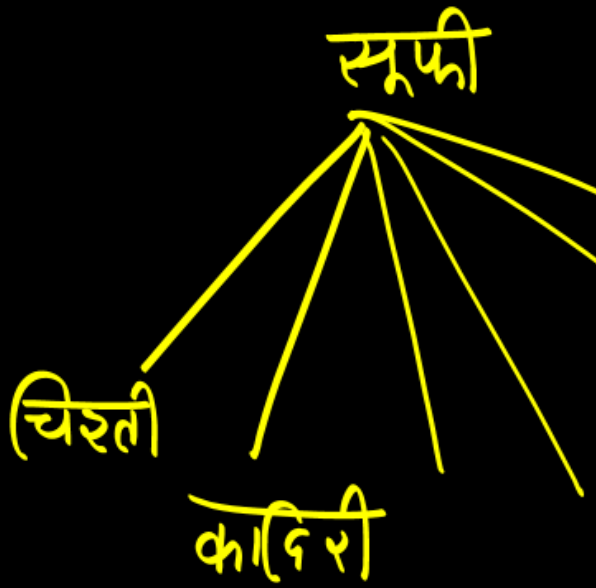

सिलसिलों के नाम

ज़्यादातर सूफ़ी वंश उन्हें स्थापित करने वालों के नाम पर पड़े। उदाहरणत:, कादरी सिलसिला शेख अब्दुल कादिर जिलानी के नाम पर पड़ा। कुछ अन्य सिलसिलों का नामकरण उनके जन्मस्थान पर हुआ जैसे चिश्ती नाम मध्य अफगानिस्तान के चिश्ती शहर से लिया गया।

Q. परिभाषा :

a) वली / खलीफा

b) मुर्शिद / पीर / शेख

c) मुरीद

d) खानकाह

e) सिलसिला

Q. सिलसिले का नामकरण किस प्रकार होता था?

Q. परिभाषा

a) जियारत

b) खैरात

c) समा

d) इशारा और बा इशारा मे अंतर स्पष्ट करें

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ख़ानक़ाह के बाहर

- कुछ रहस्यवादियों ने सूफ़ी सिद्धांतों की मौलिक व्याख्या के आधार पर नवीन आंदोलनों की नींव रखी।
- ख़ानक़ाह का तिरस्कार करके यह रहस्यवादी, फ़कीर की ज़िंदगी बिताते थे।
- निर्धनता और ब्रह्मचर्य को उन्होंने गौरव प्रदान किया। इन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता था- कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी इत्यादि।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

शरिया की अवहेलना करने के कारण उन्हें बे-शरिया कहा जाता था।

इस तरह उन्हें शरिया का पालन करने वाले (बा-शरिया) सूफ़ियों से अलग करके देखा जाता था।

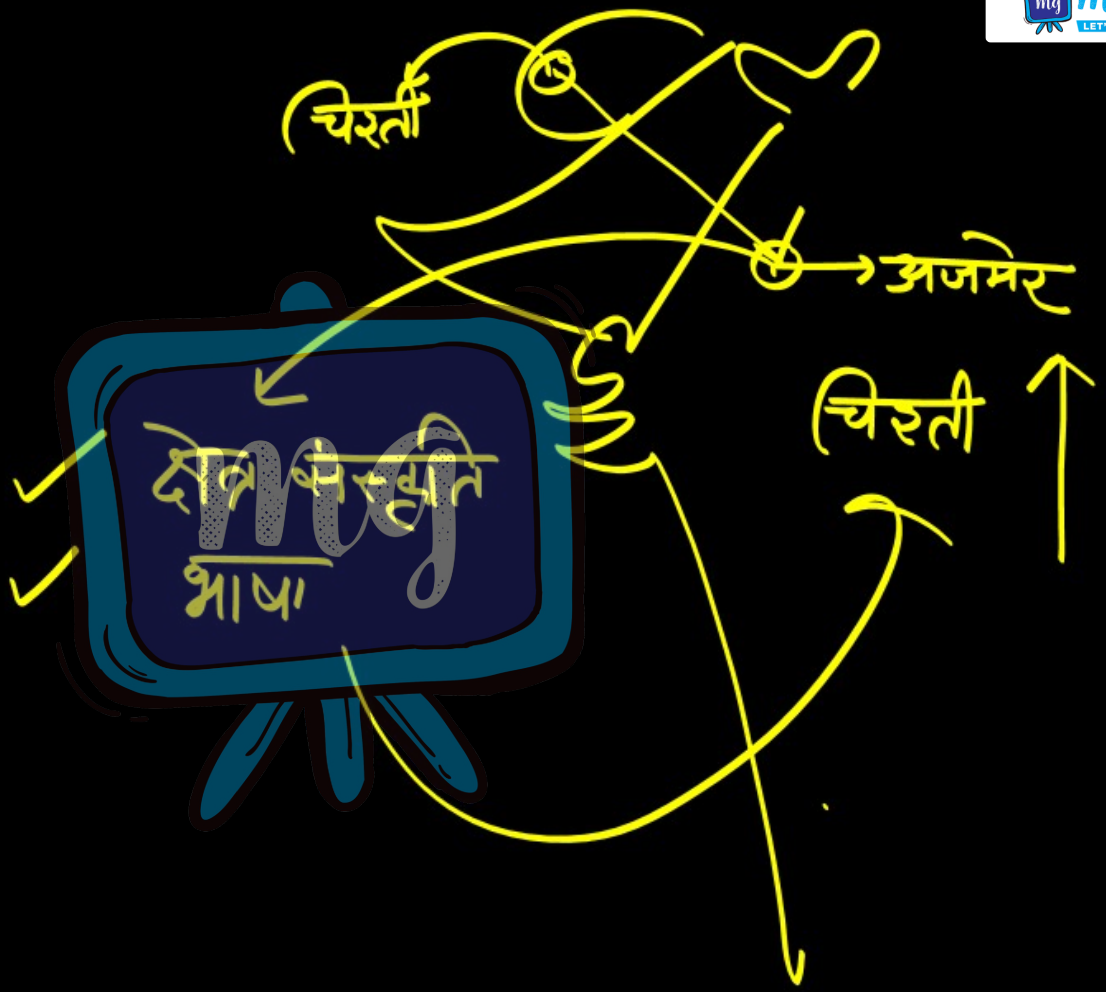
चिश्ती
अजमेर
चिश्ती
देश संस्कृति
भाषा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपमहाद्वीप में चिश्ती सिलसिला

- बारहवीं शताब्दी के अंत में भारत आने वाले सूफी समुदायों में चिश्ती सबसे अधिक प्रभावशाली रहे।
- कारण :

1. इन्होंने अपने आपको स्थानीय परिवेश में अच्छी तरह ढाला और
2. भारतीय भक्ति परंपरा की कई विशिष्टताओं को भी अपनाया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



चिश्ती सिलसिले के मुख्य उपदेशक		
सूफी	मृत्यु का वर्ष	दरगाह का स्थान
शेख मुइनुद्दीन चिश्ती	1235	अजमेर (राजस्थान)
ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी	1235	दिल्ली
शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर	1265	अजोधन (पाकिस्तान)
शेख निज़ामुद्दीन औलिया	1325	दिल्ली
शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहली	1356	दिल्ली

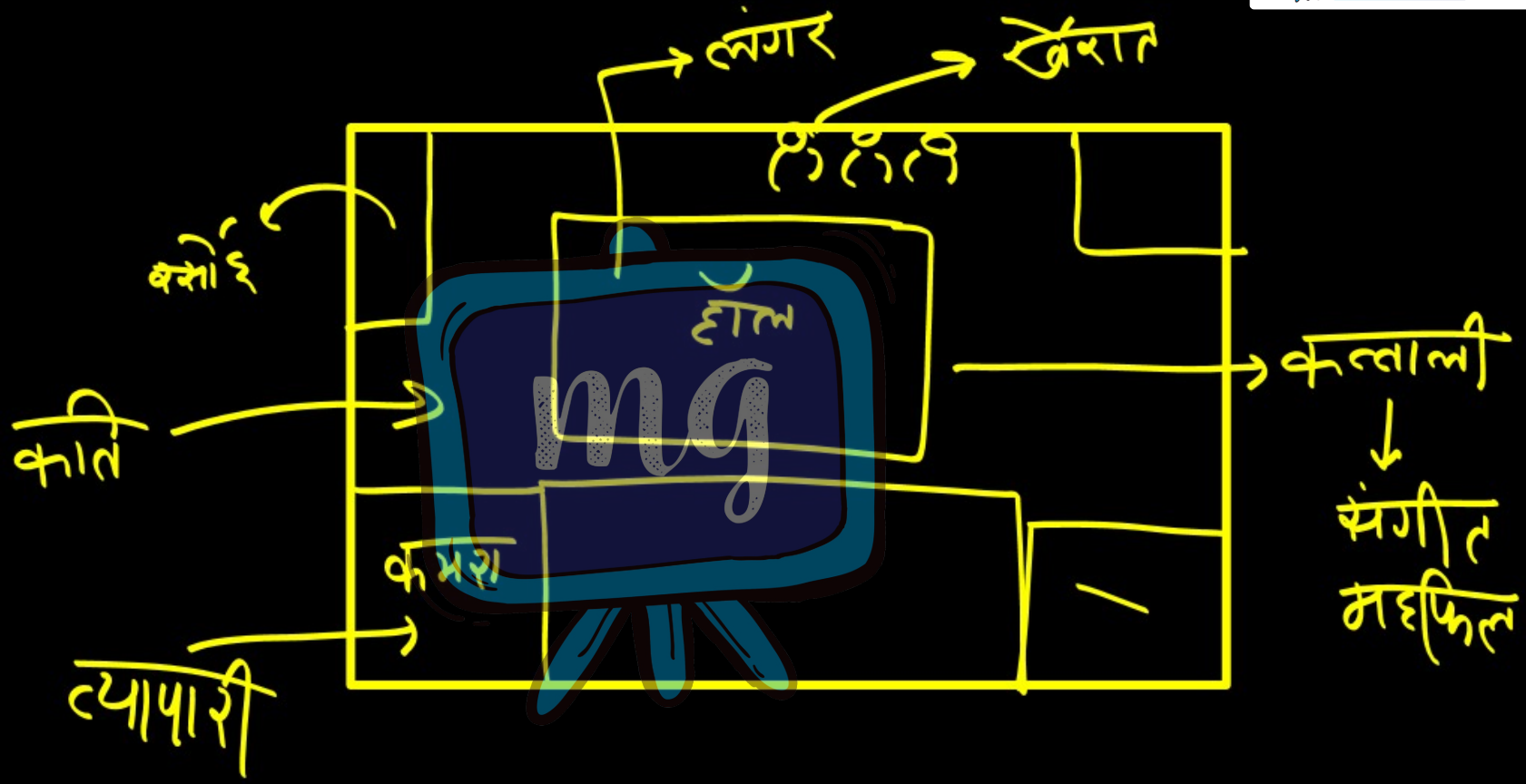
लंगर
खैरात
बसोई
हॉल
कति
कमरा
व्यापारी
कव्वाली
संगीत
महफिल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चिश्ती ख़ानक़ाह में जीवन

- ख़ानक़ाह सामाजिक जीवन का केंद्र बिंदु था।
- शेख निज़ामुद्दीन औलिया (चौदहवीं शताब्दी) का ख़ानक़ाह दिल्ली शहर की बाहरी सीमा पर यमुना नदी के किनारे ग़ियासपुर में था।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यहाँ कई छोटे-छोटे कमरे और एक बड़ा हाल (जमातखाना) था जहाँ सहवासी और अतिथि रहते, और उपासना करते थे।
- सहवासियों में शेख का अपना परिवार, सेवक और अनुयायी थे।
- शेख एक छोटे कमरे में छत पर रहते थे जहाँ वह मेहमानों से सुबह-शाम मिला करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- एक बार मंगोल आक्रमण के समय पड़ोसी क्षेत्र के लोगों ने ख़ानक़ाह में शरण ली।
- यहाँ एक सामुदायिक रसोई (लंगर) फुतूह (बिना माँगी खैरात) पर चलती थी।
- सुबह से देर रात तक सब तबके के लोग—सिपाही, गुलाम, गायक, व्यापारी, कवि, राहगीर, धनी और निर्धन, हिंदू जोगी और कलंदर यहाँ अनुयायी बनने, इबादत करने, ताबीज़ लेने अथवा विभिन्न मसलों पर शेख की मध्यस्थता के लिए आते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ अन्य मिलने वालों में अमीर हसन सिजज़ी और अमीर खुसरो जैसे कवि तथा दरबारी इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बरनी जैसे लोग शामिल थे।
- इन सभी लोगों ने शेख के बारे में लिखा।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सूफ़ी संतों के द्वारा स्थानीय परंपराओं को आत्मसात करने का प्रयत्न किया गया जैसे-

1. शेख के सामने झुकना
2. मिलने वालों को पानी पिलाना
3. दीक्षितों के सर का मुंडन
4. यौगिक व्यायाम आदि व्यवहार इस तथ्य के घोतक।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- शेख निज़ामुद्दीन ने कई आध्यात्मिक वारिसों का चुनाव किया और उन्हें उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में ख़ानक़ाह स्थापित करने के लिए नियुक्त किया।
- इस वजह से चिश्तियों के उपदेश, व्यवहार और संस्थाएँ तथा शेख का यश चारों ओर फैल गया।
- उनकी तथा उनके आध्यात्मिक पूर्वजों की दरगाह पर अनेक तीर्थयात्री आने लगे।

चिश्ती उपासना : ज़ियारत और कव्वाली

अलग-अलग संप्रदायों, वर्गों और समुदायों के लोग महान् चिश्ती संतों की दरगाह पर अपनी आस्था प्रकट करते रहे हैं चिश्तियों में सबसे अधिक पूजनीय दरगाह ख़्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) की है जिन्हें 'ग़रीब नवाज़' कहा जाता है।

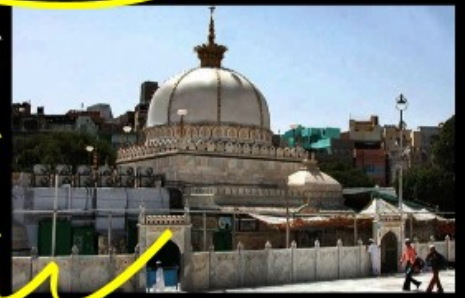

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- यह दरगाह शेख की सदाचारिता और धर्मनिष्ठा तथा उनके आध्यात्मिक वारिसों की महानता और राजसी मेहमानों द्वारा दिए गए प्रश्रय के कारण लोकप्रिय थी।
- मुहम्मद-बिन-तुगलक (1324-51) पहला सुल्तान था जो इस दरगाह पर आया था।
- किंतु शेख की मज़ार पर सबसे पहली इमारत मालवा के सुल्तान गियासुद्दीन खिलजी ने पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बनवाई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सोलहवीं शताब्दी तक आते-आते अजमेर की यह दरगाह बहुत ही लोकप्रिय हो गई थी।
- इस दरगाह को जाने वाले तीर्थयात्रियों के भजनों ने ही अकबर को यहाँ आने के लिए प्रेरित किया।
- अकबर यहाँ चौदह बार आया कभी तो साल में दो-तीन बार, कभी नयी जीत के लिए आशीर्वाद लेने अथवा संकल्प की पूर्ति पर या फिर पुत्रों के जन्म पर।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- 1568 में अकबर ने तीर्थयात्रियों के लिए खाना पकाने हेतु एक विशाल देग़ दरगाह को भेंट की। उन्होंने दरगाह के अहाते में एक मस्जिद भी बनवाई।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- नाच और संगीत भी ज़ियारत का हिस्सा थे।
- सूफ़ी संत ज़िक्र (ईश्वर का नाम-जाप) या फिर समा (श्रवण करना) यानी आध्यात्मिक संगीत की महफ़िल के द्वारा ईश्वर की उपासना में विश्वास रखते थे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भाषा और संपर्क

- न केवल समा में चिश्तियों ने स्थानीय भाषा को अपनाया अपितु दिल्ली में चिश्ती सिलसिले के लोग हिंदवी में बातचीत करते थे।
- बाबा फरीद (खानकाह-अजोधन, पंजाब) ने भी क्षेत्रीय भाषा में काव्य रचना की जो गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है।
- मलिक मोहम्मद जायसी का प्रेमाख्यान पद्मावत पद्मिनी और चित्तौड़ के राजा रतनसेन की प्रेम कथा के इर्द-गिर्द घूमता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- अक्सर ख़ानक़ाहों में समा के दौरान ऐसे काव्यों का वाचन होता था।
- कुछ और रचनाएँ लोरीनामा और शादीनामा के रूप में लिखी गई।
- लिंगायतों द्वारा लिखे गए कन्नड़ के वचन और पंढरपुर के संतों द्वारा लिखे मराठी के अभंगों ने भी उन पर अपना प्रभाव छोड़ा।

सूफी और राज्य

- चिश्ती संप्रदाय की एक और विशेषता संयम और सादगी का जीवन था जिसमें सत्ता से दूर रहने पर बल दिया जाता था।
- सत्ताधारी विशिष्ट वर्ग अगर बिना माँगे अनुदान या भेंट देता था तो सूफी संत उसे स्वीकार करते थे।
- सुल्तानों ने कईबार ख़ानक़ाहों को कर मुक्त (इनाम) भूमि अनुदान में दी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- चिश्ती धन और सामान के रूप में दान स्वीकार करते थे किंतु इनको सँजोने के बजाय खाने, कपड़े, रहने की व्यवस्था और अनुष्ठानों जैसे समा की महफिलों पर पूरी तरह खर्च कर देते थे।
- इस तरह शेख के नैतिक अधिकार की पुष्टि होती थी और आम लोगों का उनकी ओर झुकाव बढ़ता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सूफ़ी संतों की धर्मनिष्ठा, विद्वता और लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास उनकी लोकप्रियता का कारण था।
- इन वजहों से शासक भी उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे।
- जब तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की तो उलमा द्वारा शरिया लागू किए जाने की माँग को ठुकरा दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- क्योंकि सुल्तान जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रजा इस्लाम धर्म मानने वाली नहीं है।
- ऐसे समय सुल्तानों ने सूफी संतों का सहारा लिया जो अपनी आध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्भूत मानते थे जो उलमा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह भी माना जाता था कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और आध्यात्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं।
- इसलिए शासक अपनी कब्र सूफ़ी दरगाहों और ख़ानक़ाहों के नज़दीक बनाना चाहते थे।
- सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव के उदाहरण भी मौजूद हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- अपनी सत्ता का दावा करने के लिए दोनों ही कुछ आचारों पर बल देते थे जैसे-
  - झुक कर प्रणाम करना।
  - कदम चूमना।
- कभी-कभी सूफ़ी शेखों को आडंबरपूर्ण पदवी से संबोधित किया जाता था।
- उदाहरणत - शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी उन्हें सुल्तान-उल-मशखे (अर्थात शेखों में सुल्तान) कह कर संबोधित करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नवीन भक्ति पंथ : उत्तरी भारत में संवाद और असहमति

- अनेक संत कवियों ने नवीन सामाजिक परिस्थितियों, विचारों और संस्थाओं के साथ स्पष्ट और सांकेतिक दोनों किस्म के संवाद कायम किए।
- इस काल के तीन प्रमुख और प्रभावकारी व्यक्तियों पर दृष्टिपात करेंगे।

कबीर, बाबा गुरु नानक और मीराबाई ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कबीर :-

- कबीर (चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी)-
- इतिहासकारों ने उनके जीवन और काल का अध्ययन उनके काव्य और बाद में लिखी गई



जीवनियों के आधार पर किया है। यह प्रक्रिया कई वजहों से चुनौतीपूर्ण रही है।

- कबीर की बानी तीन विशिष्ट किंतु परस्पर व्याप्त परिपाटियों में संकलित है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. कबीर बीजक कबीर पंथियों द्वारा वाराणसी तथा उत्तर प्रदेश के अन्य स्थानों पर संरक्षित है।
2. कबीर ग्रंथावली का संबंध राजस्थान के दादू पंथियों से है।
3. इसके अतिरिक्त कबीर के कई पद आदि ग्रंथ साहिब में संकलित हैं।

- लगभग सभी पांडुलिपियों का संकलन कबीर की मृत्यु के बहुत बाद में किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कबीर की रचनाएँ अनेक भाषाओं और बोलियों में मिलती हैं।
- इनमें से कुछ निर्गुण कवियों की खास बोली संत भाषा में हैं।
- कुछ रचनाएँ जिन्हें उलटबाँसी (उलटी कही उक्तियाँ) के नाम से जाना जाता है, इस प्रकार से लिखी गई कि उनके रोज़मर्रा के अर्थ को उलट दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कबीर बानी की एक और विशिष्टता यह है कि उन्होंने परम सत्य को वर्णित करने के लिए अनेक परिपाटियों का सहारा लिया।
- इस्लामी दर्शन की तरह वे इस सत्य को अल्लाह, खुदा, हज़रत और पीर कहते हैं।
- वेदांत दर्शन से प्रभावित वे सत्य को अलख (अदृश्य), निराकार, ब्रह्मन् और आत्मन् कहकर भी संबोधित करते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ कविताएँ इस्लामी दर्शन के एकेश्वरवाद और मूर्तिभंजन का समर्थन करते हुए हिंदू धर्म के बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का खंडन करती हैं।
- अन्य कविताएँ ज़िक्र और इश्क के सूफ़ी सिद्धांतों का इस्तेमाल 'नाम सिमरन' की हिंदू परंपरा की अभिव्यक्ति करने के लिए करती हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- क्या ये सभी कविताएँ कबीर द्वारा रची गईं? यह कहना मुश्किल है।
- कबीर की समृद्ध परंपरा इस तथ्य की द्योतक है कि कबीर पहले और आज भी उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं जो सत्य की खोज में रूढ़िवादी, धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं, विचारों और व्यवहारों को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इस विषय पर आज भी विवाद है कि वह जन्म से हिंदू थे अथवा मुसलमान और यह विवाद अनेक संत जीवनियों में उभर कर आते हैं जो सत्रहवीं शताब्दी यानी उनकी मृत्यु के 200 वर्ष बाद से लिखी गईं।
- वैष्णव परंपरा की जीवनियों में कबीर (कबीर का अरबी में अर्थ है महान्) को जन्म से हिंदू कबीरदास बताया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- किंतु उनका पालन गरीब मुसलमान परिवार में हुआ जो जुलाहे थे और कुछ समय पहले ही इस्लाम धर्म के अनुयायी बने थे।
- इन जीवनियों में यह भी कहा जाता है कि कबीर को भक्ति का मार्ग दिखाने वाले गुरु रामानंद थे।
- इतिहासकारों का यह भी मानना है कि कबीर और रामानंद का समकालीन होना मुश्किल प्रतीत होता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बाबा गुरु नानक और पवित्र शब्द

- बाबा गुरु नानक (1469-1539) → इनका जन्म एक हिंदू व्यापारी परिवार में हुआ।
- उनका जन्मस्थल मुख्यतः इस्लाम धर्मावलंबी पंजाब का ननकाना गाँव था जो रावी नदी के पास था।



- उन्होंने फारसी पढ़ी और लेखाकार के कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- उनका विवाह छोटी आयु में हो गया था किंतु वह अपना अधिक समय सूफ़ी और भक्ति संतों के बीच गुज़ारते थे।
- उन्होंने दूर-दराज़ की यात्राएँ भी कीं।
- उन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया।
- धर्म के सभी बाहरी आडंबरों को उन्होंने अस्वीकार किया जैसे- यज्ञ, आनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति पूजा व कठोर तप।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

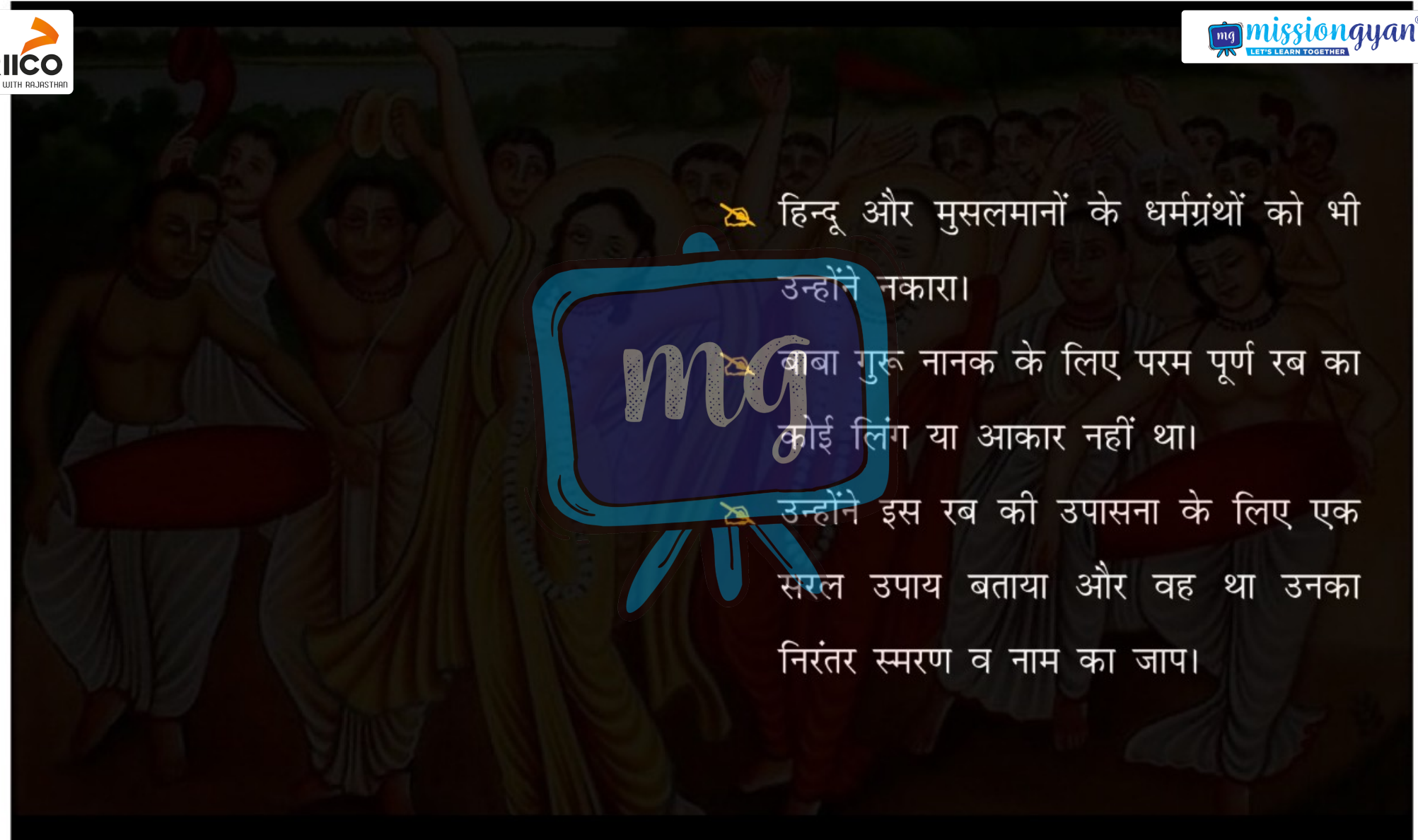

- हिन्दू और मुसलमानों के धर्मग्रंथों को भी उन्होंने नकारा।
- बाबा गुरू नानक के लिए परम पूर्ण रब का कोई लिंग या आकार नहीं था।
- उन्होंने इस रब की उपासना के लिए एक सरल उपाय बताया और वह था उनका निरंतर स्मरण व नाम का जाप।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने अपने विचार पंजाबी भाषा में शबद के माध्यम से सामने रखे।
- बाबा गुरु नानक यह शबद अलग-अलग रागों में गाते थे और उनका सेवक मरदाना रबाब बजाकर उनका साथ देता था।
- बाबा गुरु नानक ने अपने अनुयायियों को एक समुदाय में संगठित किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

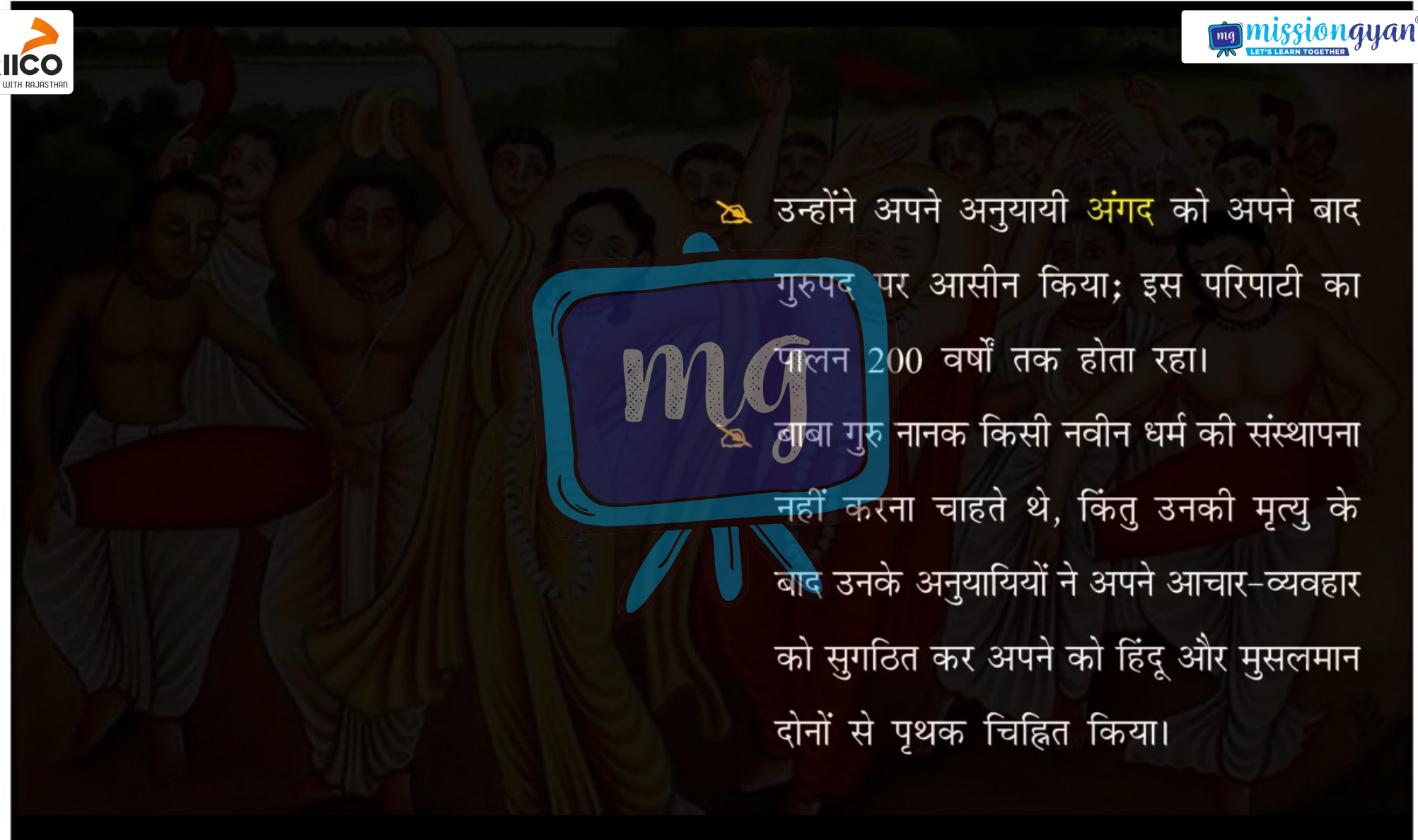

- उन्होंने अपने अनुयायी अंगद को अपने बाद गुरुपद पर आसीन किया; इस परिपाटी का पालन 200 वर्षों तक होता रहा।
- बाबा गुरु नानक किसी नवीन धर्म की संस्थापना नहीं करना चाहते थे, किंतु उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने अपने आचार-व्यवहार को सुगठित कर अपने को हिंदू और मुसलमान दोनों से पृथक चिह्नित किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

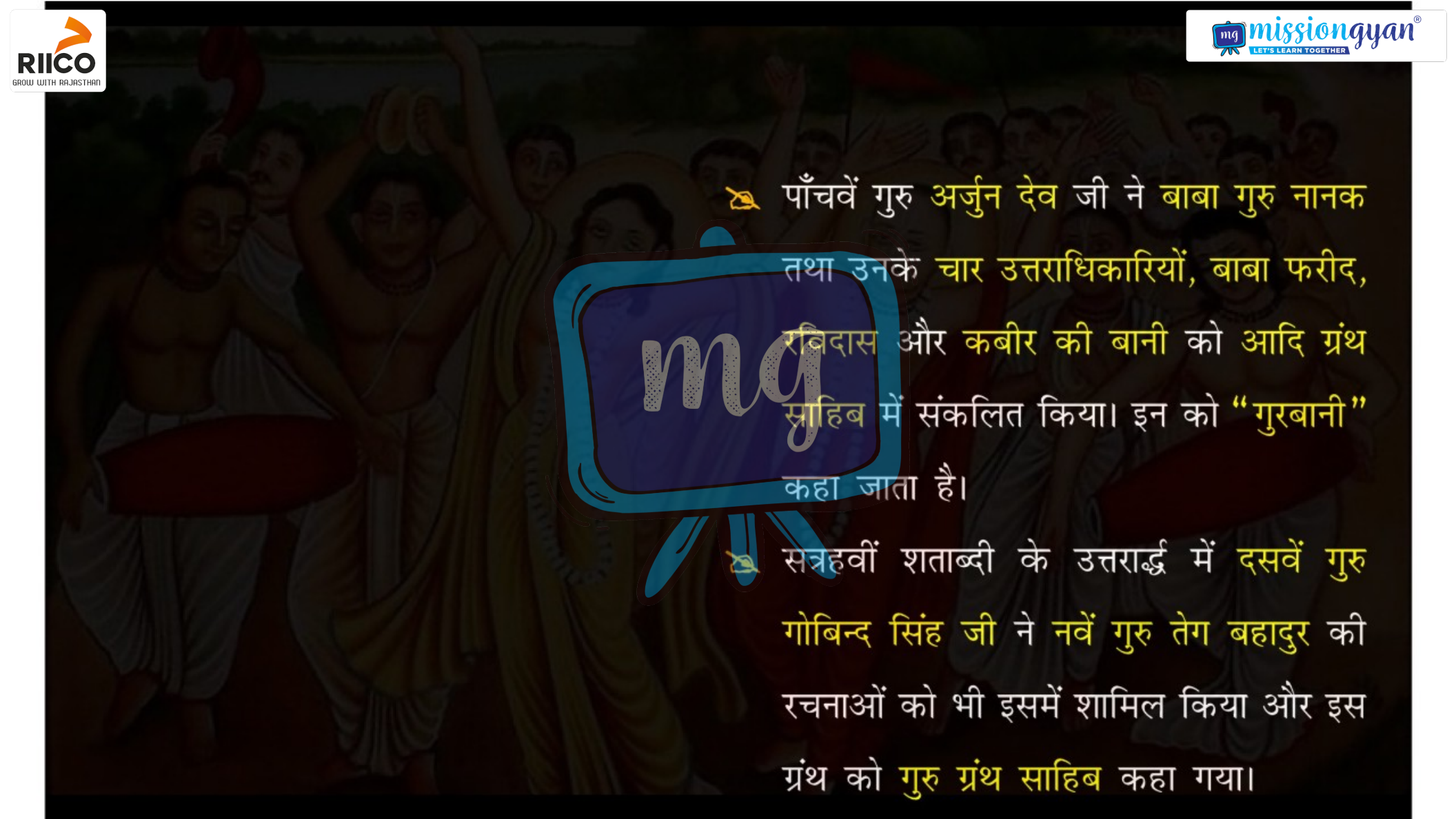

- पाँचवें गुरु अर्जुन देव जी ने बाबा गुरु नानक तथा उनके चार उत्तराधिकारियों, बाबा फरीद, रविदास और कबीर की बानी को आदि ग्रंथ साहिब में संकलित किया। इन को "गुरबानी" कहा जाता है।
- सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दसवें गुरु गोबिन्द सिंह जी ने नवें गुरु तेग बहादुर की रचनाओं को भी इसमें शामिल किया और इस ग्रंथ को गुरु ग्रंथ साहिब कहा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

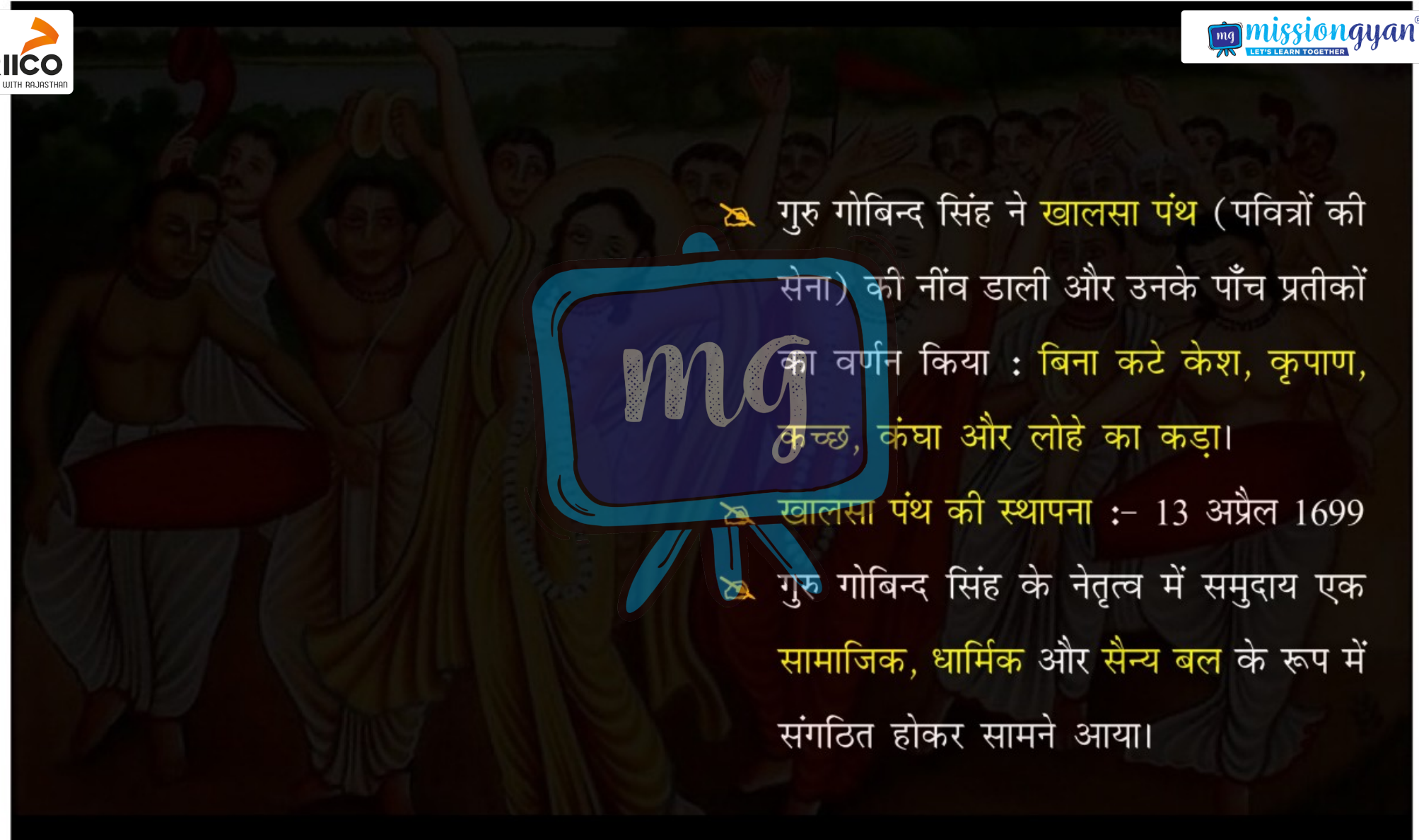

- गुरु गोबिन्द सिंह ने **खालसा पंथ** (पवित्रों की सेना) की नींव डाली और उनके पाँच प्रतीकों का वर्णन किया : **बिना कटे केश, कृपाण, कच्छ, कंघा और लोहे का कड़ा**।
- **खालसा पंथ की स्थापना** :- 13 अप्रैल 1699
- गुरु गोबिन्द सिंह के नेतृत्व में समुदाय एक **सामाजिक, धार्मिक** और **सैन्य बल** के रूप में संगठित होकर सामने आया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मीराबाई, भक्तिमय राजकुमारी

- मीराबाई (लगभग पंद्रहवीं–सोलहवीं शताब्दी)– ये संभवतः भक्ति परंपरा की सबसे सुप्रसिद्ध कवयित्री हैं।



- मीराबाई मारवाड़ के मेड़ता जिले की एक राजपूत राजकुमारी थीं जिनका विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया कुल में कर दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करते हुए पत्नी और माँ के परंपरागत दायित्वों को निभाने से इनकार किया और विष्णु के अवतार कृष्ण को अपना एकमात्र पति स्वीकार किया।
- वह राजभवन से निकल कर एक परिब्राजिका संत बन गई।

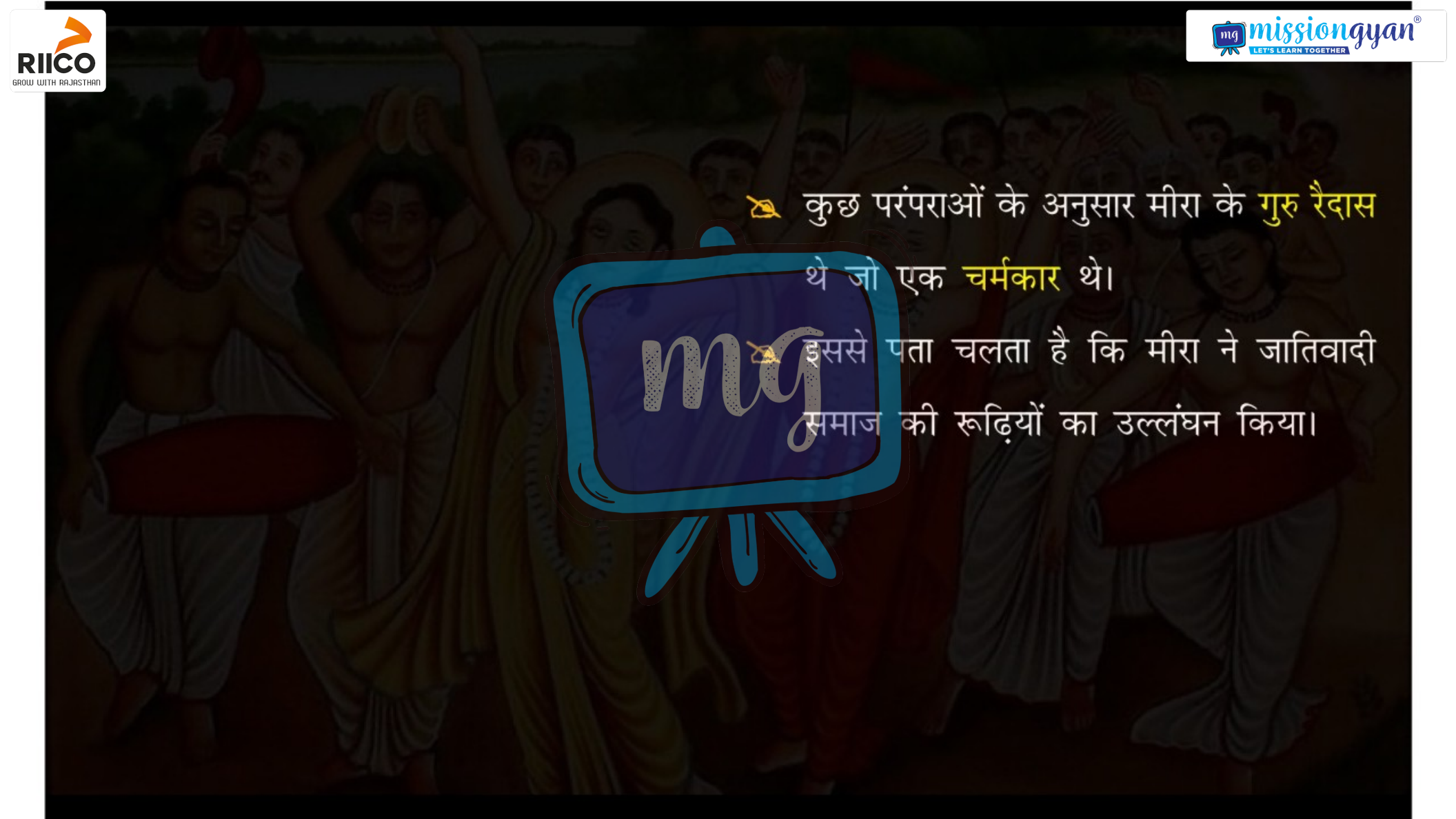
कुछ परंपराओं के अनुसार मीरा के गुरु रैदास थे जो एक चर्मकार थे।
इससे पता चलता है कि मीरा ने जातिवादी समाज की रूढ़ियों का उल्लंघन किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शंकरदेव

पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में असम में शंकरदेव वैष्णव धर्म के मुख्य प्रचारक के रूप में उभरे। उनके उपदेशों को 'भगवती धर्म' कह कर संबोधित किया जाता है क्योंकि वे भगवद् गीता और भागवत पुराण पर आधारित थे। ये उपदेश सर्वोच्च देवता विष्णु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव पर केंद्रित थे।

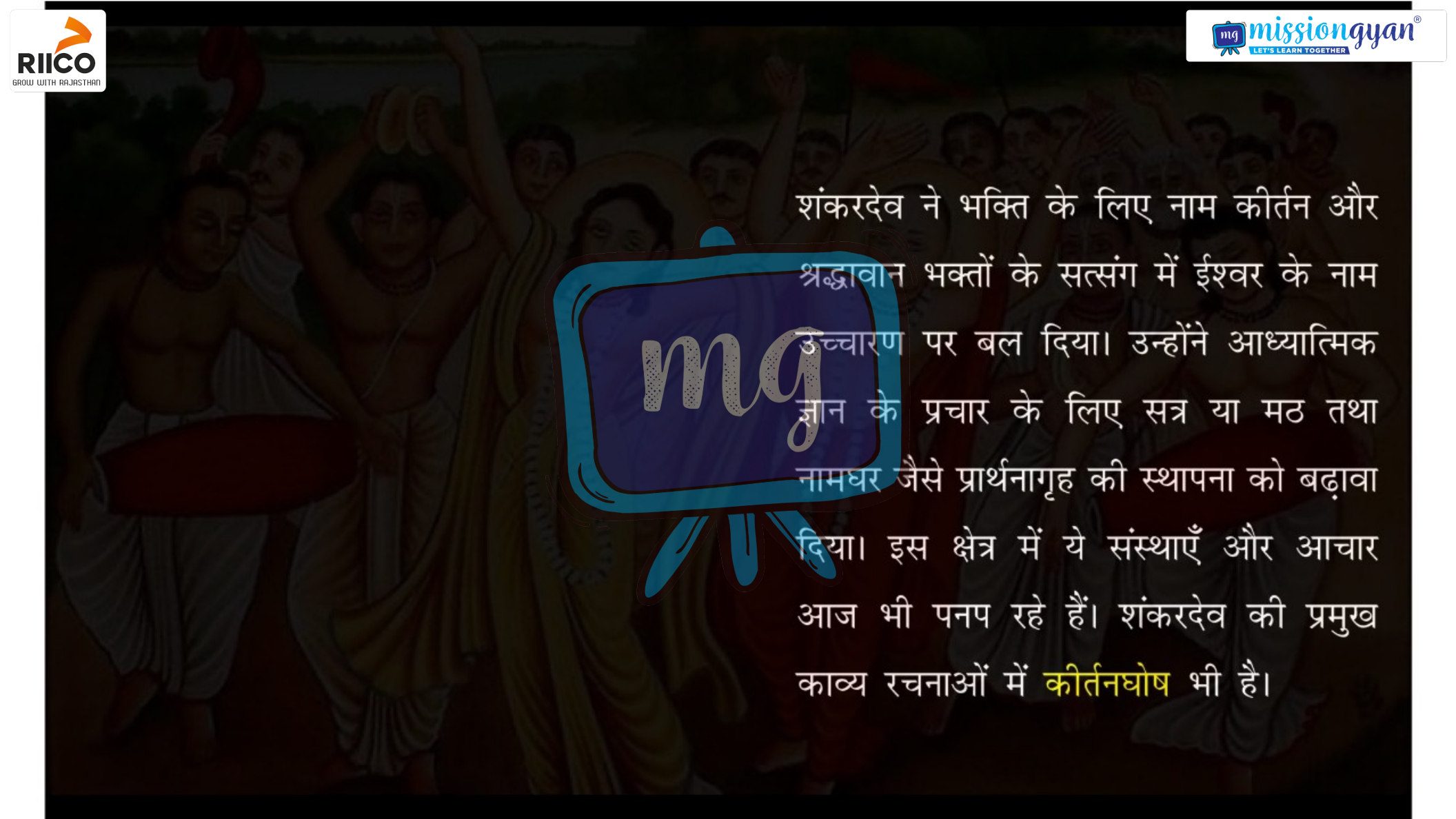
शंकरदेव ने भक्ति के लिए नाम कीर्तन और श्रद्धावान भक्तों के सत्संग में ईश्वर के नाम उच्चारण पर बल दिया। उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार के लिए सत्र या मठ तथा नामघर जैसे प्रार्थनागृह की स्थापना को बढ़ावा दिया। इस क्षेत्र में ये संस्थाएँ और आचार आज भी पनप रहे हैं। शंकरदेव की प्रमुख काव्य रचनाओं में कीर्तनघोष भी है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

धार्मिक परंपराओं के इतिहासों का पुनर्निर्माण

- इतिहासकार धार्मिक परंपरा के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए अनेक स्रोतों का उपयोग करते हैं –जैसे मूर्तिकला, स्थापत्य, धर्मगुरुओं से जुड़ी कहानियाँ, स्त्री और पुरुषों द्वारा लिखी गई काव्य रचनाएँ आदि।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

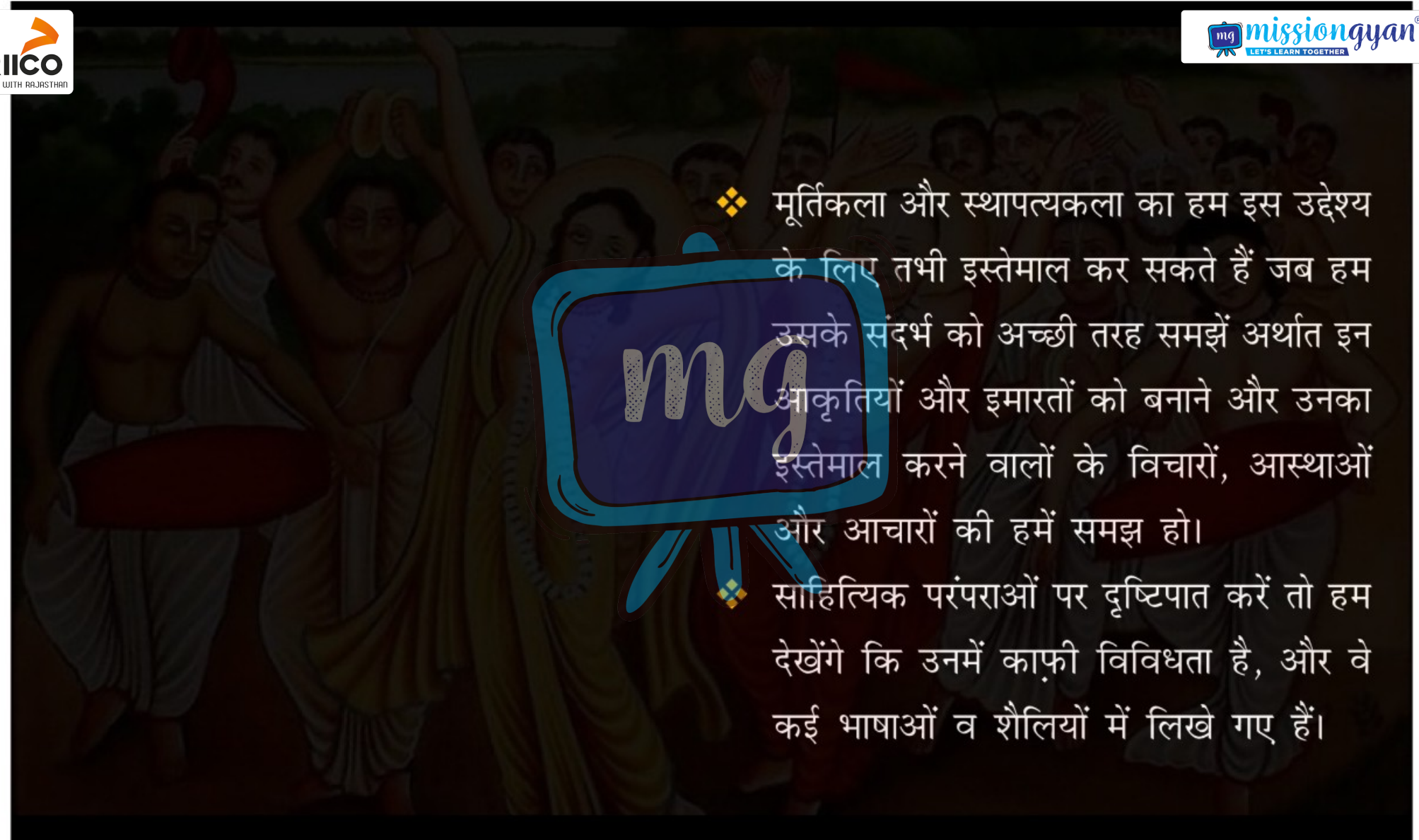

- मूर्तिकला और स्थापत्यकला का हम इस उद्देश्य के लिए तभी इस्तेमाल कर सकते हैं जब हम उसके संदर्भ को अच्छी तरह समझें अर्थात इन आकृतियों और इमारतों को बनाने और उनका इस्तेमाल करने वालों के विचारों, आस्थाओं और आचारों की हमें समझ हो।
- साहित्यिक परंपराओं पर दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि उनमें काफ़ी विविधता है, और वे कई भाषाओं व शैलियों में लिखे गए हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

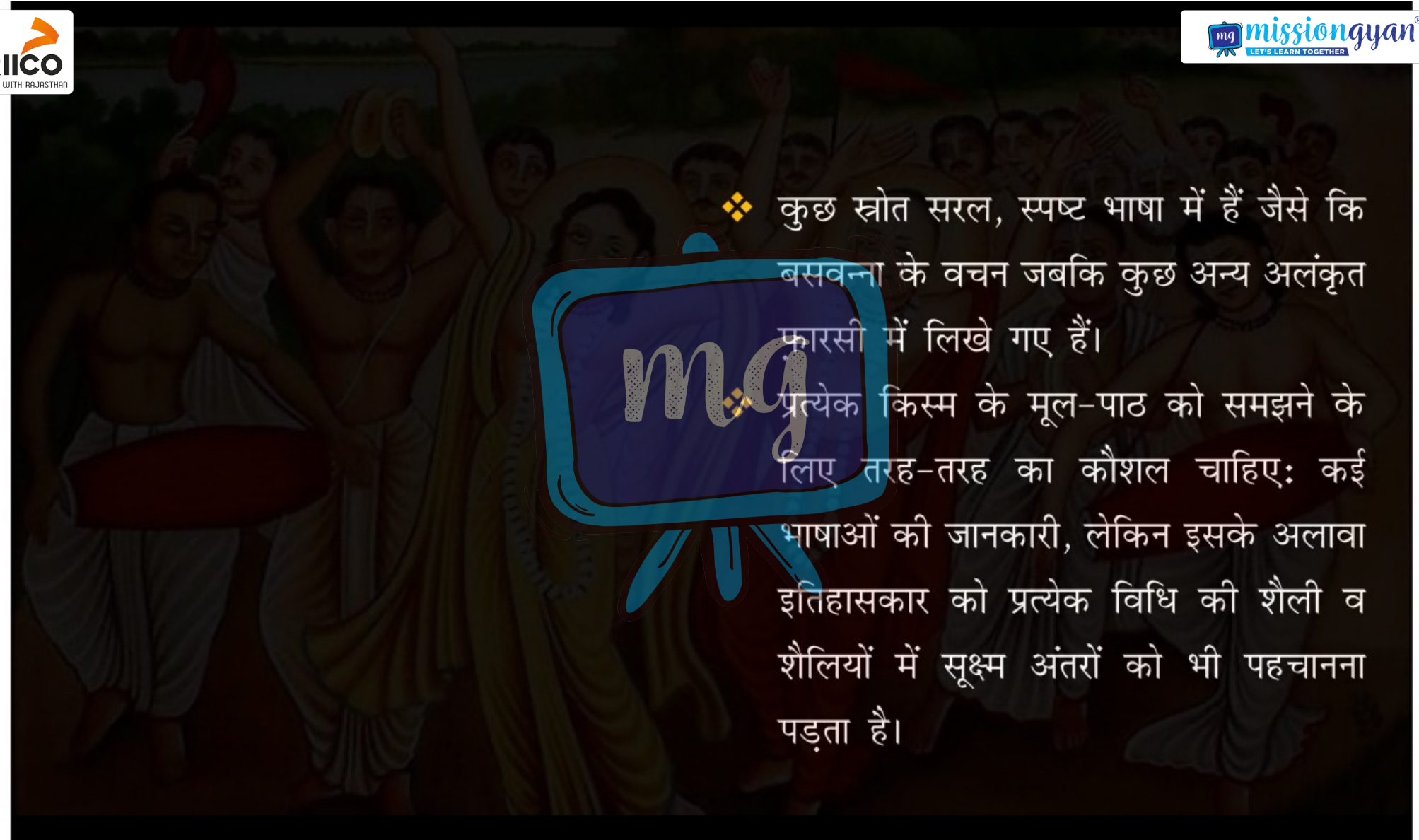

- कुछ स्रोत सरल, स्पष्ट भाषा में हैं जैसे कि बसवन्ना के वचन जबकि कुछ अन्य अलंकृत फारसी में लिखे गए हैं।
- प्रत्येक किस्म के मूल-पाठ को समझने के लिए तरह-तरह का कौशल चाहिए: कई भाषाओं की जानकारी, लेकिन इसके अलावा इतिहासकार को प्रत्येक विधि की शैली व शैलियों में सूक्ष्म अंतरों को भी पहचानना पड़ता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सूफी परंपरा के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए विभिन्न स्रोत

सूफी ख़ानक़ाहों के आसपास अनेक ग्रंथों की रचना हुई जिनमें निम्न शामिल हैं:

1. सूफी विचारों और आचारों पर प्रबंध पुस्तिका कश्फ-उल-महजुब यह पुस्तक अली बिन उस्मान हुजविरी (मृत्यु 1071) द्वारा लिखी गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

साहित्य इतिहासकारों को यह जानने में मदद करता है कि उपमहाद्वीप के बाहर की परंपराओं ने भारत में सूफ़ी चिंतन को किस तरह प्रभावित किया।

2. मुलफ़ुज़ात (सूफ़ी संतों की बातचीत): मुलफ़ुज़ात पर एक आरंभिक ग्रंथ फ़वाइद-अल-फ़ुआद है। यह शेख निज़ामुद्दीन औलिया की बातचीत पर आधारित एक संग्रह है जिसका संकलन प्रसिद्ध फ़ारसी कवि अमीर हसन सिजज़ी देहलवी ने किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. मक्तुबात (लिखे हुए पत्रों का संकलन): ये वे पत्र थे जो सूफी संतों द्वारा अपने अनुयायियों और सहयोगियों को लिखे गए। इन पत्रों से धार्मिक सत्य के बारे में शेख के अनुभवों का वर्णन मिलता हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

4. तज़किरा (सूफ़ी संतों की जीवनियों का स्मरण) :

भारत में लिखा पहला सूफ़ी तज़किरा मीर खुर्द किरमानी का सियार-उल-औलिया है। यह तज़किरा मुख्यतः चिश्ती संतों के बारे में था। सबसे प्रसिद्ध तज़किरा अब्दुल हक मुहाद्दिस देहलवी (मृत्यु 1642) का अख्बार-उल-अखयार है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

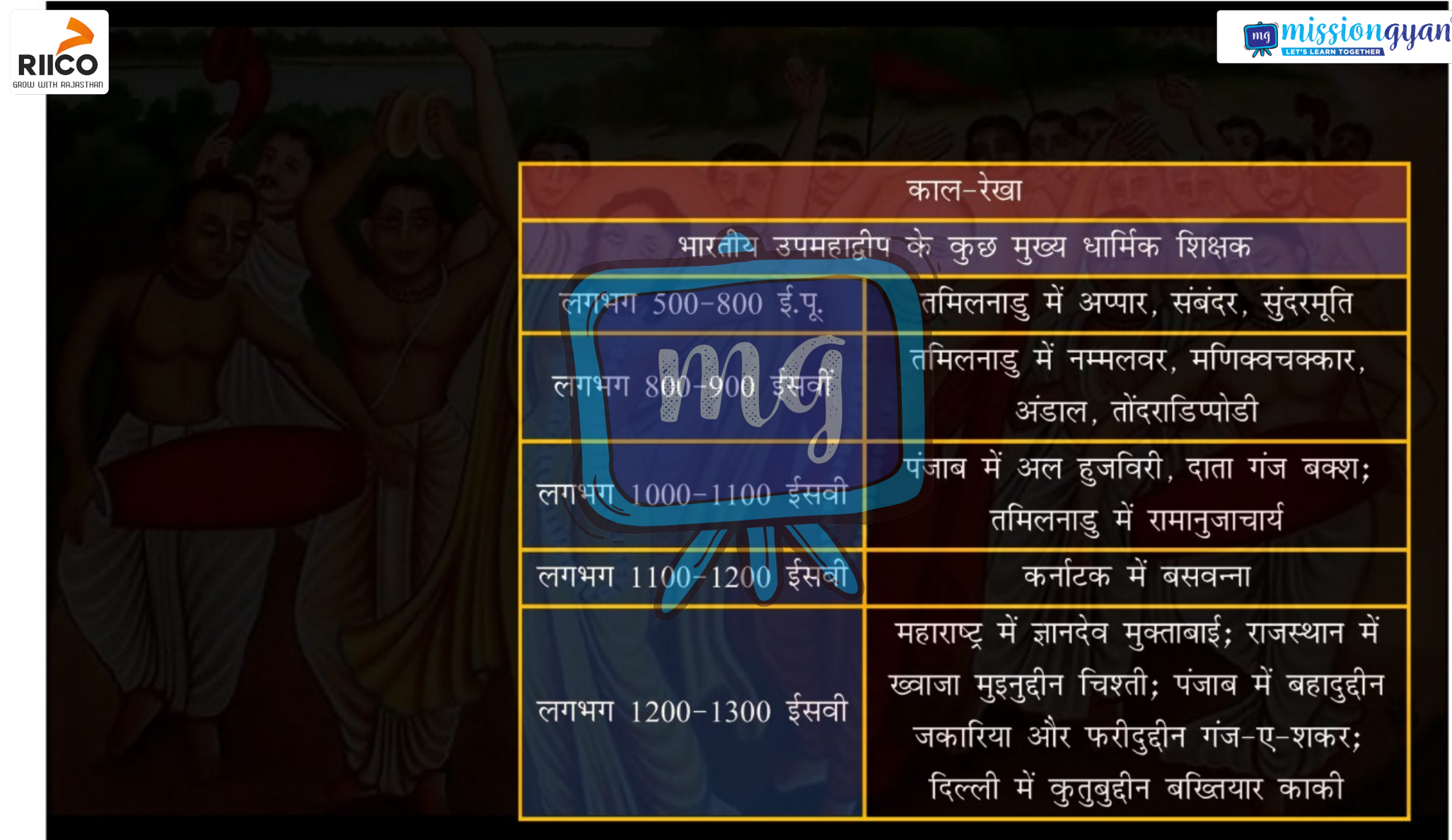

काल-रेखा	
भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ मुख्य धार्मिक शिक्षक	
लगभग 500-800 ई.पू.	तमिलनाडु में अप्पार, संबंदर, सुंदरमूर्ति
लगभग 800-900 ईसवीं	तमिलनाडु में नम्मलवर, मणिक्वचक्कार, अंडाल, तोंदराडिप्पोडी
लगभग 1000-1100 ईसवी	पंजाब में अल हुजविरी, दाता गंज बक्श; तमिलनाडु में रामानुजाचार्य
लगभग 1100-1200 ईसवी	कर्नाटक में बसवन्ना
लगभग 1200-1300 ईसवी	महाराष्ट्र में ज्ञानदेव मुक्ताबाई; राजस्थान में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती; पंजाब में बहादुद्दीन जकारिया और फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर; दिल्ली में कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

काल-रेखा	
भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ मुख्य धार्मिक शिक्षक	
लगभग 1300-1400 ईसवी	कश्मीर में लाल देद; सिंध में लाल शाहबाज़ कलंदर; दिल्ली में निज़ामुद्दीन औलिया; उत्तर प्रदेश में रामानंद; महाराष्ट्र में चोखमेला; बिहार में शराफुद्दीन याह्या मनेरी
लगभग 1400-1500 ईसवी	उत्तर प्रदेश में कबीर, रैदास, सूरदास; पंजाब में बाबा गुरु नानक; गुजरात में बल्लभाचार्य; ग्वालियर में अबदुल्ला सत्तारी; गुजरात में मुहम्मद शाह आलम; गुलबर्गा में मीर सैयद मौहम्मद गेसू दराज़; असम में शंकरदेव; महाराष्ट्र में तुकाराम

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

काल-रेखा	
भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ मुख्य धार्मिक शिक्षक	
लगभग 1500-1600 ईसवी	बंगाल में श्री चैतन्य; राजस्थान में मीराबाई; उत्तर प्रदेश में शेख अब्दुल कुद्दस गंगोही, मलिक मौहम्मद जायसी, तुलसीदास
लगभग 1600-1700 ईसवी	हरियाणा में शेख अहमद सरहिंदी; पंजाब में मियाँ मीर